माहेश्वरीतन्त्र

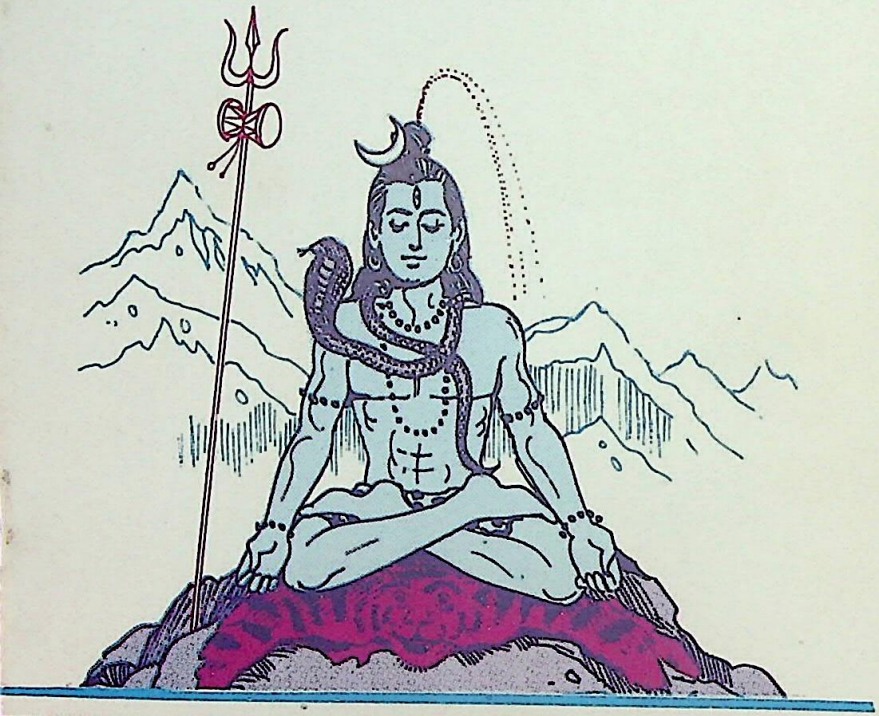

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

श्रीः

माहेश्वरीयतन्त्रम्

हिन्दीटीकासहितम्

श्रीमत्पण्डितलक्ष्मीनारायण-
विरचितम्

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई-४०० ००४

संस्करण : अप्रैल २०११, संवत् २०६८

मूल्य : १५ रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwa
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्रीः

अथ माहेश्वरीयतंत्रम्

हिन्दीटीकासहितम्

प्रथम अङ्क

श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ।। गंगाधरं श्रीगिरिजासमेतं ज्वालाप्रसादं च गुरुं प्रणम्य ।। लक्ष्म्यादिशब्देन विराजमानो नारायणोऽहं कथयामि तंत्रम् ।। १ ।।

श्री गिरिराजनन्दनीसमेत महादेवजीको तथा गुरु ज्वालाप्रसादजीको प्रणाम करके मैं लक्ष्मीनारायण तंत्रशास्त्रोंका सारभूततन्त्र कहता हूँ ।। १ ।।

श्रीमत्त्र्यंबकपर्वते शिवगिरिः संन्यासिनामग्रणीर्नाना-
तंत्रविधानसाधनयुतो ह्यासीत्सतां वल्लभः । तंत्रा-
नेकक्रियासु सिद्धिमविदन् गत्वानुतापं मुहुश्चक्रे
शंकरसंनिधौ सुविनयं त्यक्त्वाशनं सर्वथा ।। २ ।।

सुन्दर त्र्यंबकपर्वतपर संन्यासियोंका शिरोमणि, अनेक तंत्रों में कही हुई क्रियाओंके साधनोंसे युक्त और सज्जनोंका प्रिय शिवगिरि था । तंत्रोंकी बहुतसी क्रियाओंमें सिद्धि प्राप्त न होनेसे उसे बडा परिताप हुआ पर फिर उसने सब आहार आदिको छोड़ महादेवजीके निकट जाकर . प्रार्थना की ।। २ ।।

तस्मै श्रीगिरिजापतिः कथितवान् स्वप्ने प्रयोगाञ्छुभान्येभ्यः सिद्धिमनुत्तमामनुभवञ्जातश्च सिद्धाग्रणीः । सोऽस्माकं बहुसेवया कथितवान् प्रत्यक्षसिद्धिप्रदांस्तान्मन्त्रान् प्रकटीकरोमि सुधियामानंददानद्भुतान् ।। ३ ।।

श्रीमहादेवजीने स्वप्नमें उससे अच्छे२ प्रयोग कहे, जिनसे उसे सिद्धि प्राप्त करनेमें अच्छी सफलता हुई और वह सब सिद्धों का अग्रगण्य हो गया उसकी मैंने बहुत सेवा की तब उसने मुझसे प्रत्यक्ष सिद्धि देने वाले मन्त्र कहे । उनही पंडितोंको आनंद देनेवाले अद्‌भुत मन्त्रोंको मैं प्रकाशित करता हूँ ।। ३ ।।

यथा शिवगिरिं देवः स्वप्ने कथितवान् हरः ।
तेनैव विधिना वक्ष्ये तंत्रं मंत्रसमन्वितम् ॥ ४ ॥

जैसे भगवान् महादेवने शिवगिरिसे स्वप्नमें कहा था उसी विधिसे मन्त्र-समेत तन्त्रको कहता हूँ ॥ ४ ॥

स्वप्ने तु गिरिशं दृष्ट्वा त्र्यंबकं वृषवाहनम् ।
पार्वत्या सहितं देवं योगी पप्रच्छ सादरम् ॥ ५ ॥

पार्वतीसहित बैलपर विराजमान, त्रिलोचन, भगवान् शंकर को स्वप्न में देखकर शिवगिरिने आदरसहित पूछा ॥ ५ ॥

मुनिरुवाच

नमामि सच्चिदानंदं जगद्योनिमुमापतिम् ।
छिन्धिमे संशयं देव नान्यथा जीवितं मम ॥ ६ ॥

मुनि बोला सत्, चित्, आनन्दरूप, जगत्के कारण और पार्वतीके पति शिवजीको मैं प्रणाम करता हूँ । हे देव ! मेरा संदेह दूर कीजिए, नहीं तो मेरा जीना कठिन है ॥ ६ ॥

भवता कथिता मंत्रास्ते कथं सिद्धिर्वर्जिताः ।
मया परीक्षिताः सर्वे योगयुक्तेन चेतसा ॥ ७ ॥

आपके कहे हुए सब मंत्रोंकी मैंने चित्तसे प्रयोग करके परीक्षा की । उनसे सिद्धि क्यों नहीं होती ? ॥ ७ ॥

ईश्वर उवाच

ये मंत्रा लोकविख्यातास्ते सर्वे कीलिता मया ।
तस्मात्सिद्धिविहीनास्ते याता निःसारतां भुवि ॥ ८ ॥

महादेव बोले—जो तंत्र संसारमें प्रकट हैं उन सबको मैंने कील दिया है इसलिये उनसे सिद्धि नहीं हो सकती । पृथ्वीपर वे निः सार हो गये हैं ॥ ८ ॥

तस्मादुत्तिष्ठ भद्रं ते कथयामि सुसिद्धिदान् । मन्त्रानकीलि-
तान् वत्स यैस्त्वं सिद्धो भविष्यसि ॥ ९ ॥

इसलिये हे वत्स ! उठ, तेरा मंगल हो, मैं सिद्धि देने वाले विना कीले हुए मंत्र तुझसे कहता हूं जिनसे तू सिद्ध हो जायगा ।। ९ ।।

मारणं मोहनं स्तंभं विद्वेषोच्चाटनं वशम् ।
आकर्षणं यक्षिणी च रसायनकरं तथा ।। १० ।।

मारण, मोहन, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण यक्षिणियोंका साधन और रसायन ।। १० ।।

प्रयोगैर्नवभिर्युक्तं तंत्रं माहेश्वराभिधम् ।
इदं ते कथयिष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।। ११ ।।

इन नौ प्रयोगोंसे युक्त माहेश्वरनामक तंत्र लोकहितकी इच्छासे तुझसे कहता हूँ ।। ११ ।।

इति प्रथम अंक समाप्त

द्वितीय अङ्क

ईश्वर उवाच

अथातः कथयिष्यामि प्रयोगंमारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ।। १ ।।

महादेव बोले—अब मारण प्रयोग कहता हूँ जिससे कि मनुष्योंको तत्काल सिद्धि होगी । हे मुने ! सावधान होकर सुन ।। १ ।।

मारणं न वृथा कार्य यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणांतसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ।। २ ।।

वृथा चाहे जिसका मारण कभी न करना चाहिए। जिसे ऐश्वर्यकी इच्छा हो ऐसे आदमीको जब प्राण सकटमें हो तभी इसका प्रयोग करना चाहिए ।।२।।

ब्रह्मात्मानं तु चिंततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ।। ३ ।।

"सब संसार ब्रह्मरूप है" यह ज्ञानरूपी नेत्रोंसे देखकर मारण प्रयोग करना चाहिए, नहीं तो दोष होता है ।। ३ ।।

मूर्खेण तु कृते तंत्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ।
तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत् ।। ४ ।।

मूर्ख अज्ञानसे प्रयोग करे तो वह उसपर ही पडता है इसलिये अपनी रक्षा करे और मारण प्रयोग जहां तक हो सके वहांतक न करे ।। ४ ।।

कर्त्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ।
शत्रुपादतलात्पांसुं गृह्णीयाद्भौमवासरे ।। ५ ।।

यदि मारण करना जरूर हो तो इस प्रकारसे करे कि मंगल के दिन शत्रुने जिस स्थानमें अपना पैर रक्खा हो वहांकी धूल लावे ।। ५ ।।

गोमूत्रेण च सिंचित्वा प्रतिमां कारयेद्द्विषः ।
निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत्स्थंडिलोरि ।। ६ ।।

उसमें गोमूत्र मिलाकर शत्रुकी मूर्ति बनावे और नदी तीरपर एकान्त में वेदीपर उसे स्थापित करे ।। ६ ।।

लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम् ।
तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं यजेत् ।। ७ ।।

उसकी छातीमें अत्यन्त कठिन लोहेका त्रिशूल गाड दे और उसकी बाईं ओर बलिदान देकर कालभैरवका प्रतिदिन पूजन करे; ।। ७ ।।

एकादशबटूंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत् ।
अखंडदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् ।। ८ ।।

वहां ग्यारह बालकोंको उत्तम अन्नसे भोजन करावे और उस मूर्तिके आगे सरसोंके तेलका ऐसा दीपक जलावे जो दिन रात जलता रहे ।। ८ ।।

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मंत्रमतंद्रितः ।। ९ ।।

व्याघ्रचर्मका आसन बिछाकर उसके दक्षिणकी ओर बैठे और रात्रिको दक्षिणदिशाकी ओर मुख करके सावधान होकर इस मन्त्रको जपे ।। ९ ।।

ॐ नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय मारय पोथय पोथय हूं फट् स्वाहा ।।

इस मन्त्रका जप करना ।।

अयुतं प्रजपेदेनं मंत्रं निशि समाहितः ।
एकोनत्रिंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ।। १० ।।

रातको सावधान होकर यह मन्त्र दस हजार बार जपे तो निश्चयपूर्वक उन्तीस दिनमें मारण होगा ।। १० ।।

इत्येवं मारणं तंत्रं सद्यः सिद्धिकरं नृणाम् ।
कथितं शिवगिरे तुभ्यं मोहनं शृण्वथोपरम् ।। ११ ।।

यही मारणतंत्र मनुष्योंको तत्काल सिद्धि देनेवाला है । हे शिवगिरे ! यह मैंने तुझसे कहा । अब मोहन प्रयोग सुन ।। ११ ।।

इति द्वितीय अंक समाप्त

तृतीय अङ्क

ईश्वर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यःसिद्धिकरं नृणां शृणु योगीन्द्र यत्नतः ।। १ ।।

अब मोहन प्रयोगको कहता हूँ; जिससे मनुष्योंको तत्काल सिद्धि होती है । हे योगिराज ! सावधान होकर सुन ।। १ ।।

पेषयेत्तुलसीबीजं सहदेव्या रसेन च ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत् ।। २ ।।

सहदेवीके रसमें तुलसीके बीज पीसे । रविवारके दिन जो इनका तिलक लगावे वह सब संसारको मोहित कर ले ।। २ ।।

हरितालं चाश्वगंधां पेषयेत् कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ।। ३ ।।

हरताल, असगंध और गोरोचन केलेके रसमें पीसकर तिलक करे तो संसारको मोहित कर ले ।। ३ ।।

शृंगीचंदनकुष्ठेन वचाधूपेन धूपयेत् ।
वस्त्राणि च मुखं चैव सर्वजंतून्विमोहयेत् ।। ४ ।।

काकडासिंगी, चन्दन, कूट और वच इनकी धूप मुख और कपड़ोंमें देनेसे सब प्राणियोंको मोहित कर ले ।। ४ ।।

मनःशिलां च कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ।। ५ ।।

मैनसिल और कपूर केलेके रसमें पीसकर तिलक करे तो मनुष्योंको मोहित कर ले । मेरा कहना सत्य है ।। ५ ।।

सिंदूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन संपिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ।। ६ ।।

सिन्दूर, केशर और गोरोचन धात्रीके रसमें पीसकर तिलक करे तो संसारको मोहित कर ले ।। ६ ।।

औदुंबरस्य पुष्पेण वर्ति कृत्वा प्रदीपयेत् ।
नवनीतेन संयुक्तं कज्जलं लोकमोहनम् ।। ७ ।।

गूलरके फूलकी बत्ती बनाकर और उसमें मक्खन लगाकर उसे जलावे । उसका काजल बनाकर लगानेसे संसारको मोहित कर ले ।। ७ ।।

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचंदनसंयुतम् ।
अनेन तिलकं भाले जगतो मोहनं भवेत् ।। ८ ।।

सफेद आककी जड़ और सफेद चन्दन इनका तिलक मस्तक में करनेसे संसारको मोहित कर ले ।। ८ ।।

विजयावचमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
उद्वर्तनेन देहस्य जगतो मोहनं भवेत् ।। ९ ।।

विजया, वच, सरसों इनका देहमें उबटन करनेसे संसारको मोहित कर ले ।। ९ ।।

ॐ रक्तचामुण्डेसर्वजनान् मोहय २ मम वश्यं कुरु २ स्वाहा।।
सपादलक्ष जपात्सिद्धिर्भवति ।।

इस मंत्रको सवा लाख जपनेसे सिद्धि होगी ।।

इति तृतीय अंक समाप्त

चतुर्थ अङ्क

ईश्वर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तंभनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ।। १ ।।

ईश्वर बोले—अब स्तम्भन प्रयोग कहता हूँ, जिसके साधन से ही सिद्धि मुट्ठीमें आ जाती है ।। १ ।।

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यंगमाचरेत् ।
अग्निना न दहेदंगमग्निस्तंभः प्रजायते ।। २ ।।

घीगुवारका गूदा और तेल मिलाकर शरीरमें लगानेसे शरीर आंचसे जलता नहीं है । अग्निका स्तम्भन हो जाता है ।। २ ।।

कदलीरसमादाय कुमारीरसं लेपयेत् ।
अर्कदुग्धं तथा युक्तमग्निस्तंभः प्रजायते ।। ३ ।।

केलेका रस, घीगुवारका गूदा और आकका दूध इनके लगानेसे अग्नि स्तम्भन होता है ।। ३ ।।

कुमारी रस लेपेन किंचिद्वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तंभनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ।। ४ ।।

घीगुवारके गूदेका लेप करनेसे कोई वस्तु जलती नहीं है । मेरा कहना मिथ्या नहीं है । यह अग्नि स्तम्भन योग है ।। ४ ।।

ॐनमो अग्निरूपायमम शरीरेस्तंभनंकुरु २ स्वाहा ।।

इस मंत्रको एक लाख जपनेसे सिद्धि होती है ।

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वाश्वेतगुंजां च निर्वपेत् ।
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्याद्गुञ्जालतांशुभाम् ।। ५ ।।

आदमीकी खोपड़ीमें मट्टी भरकर उसमें सफेद गुञ्जके बीज बोवे। फिर उसे गायके दूधसे सींचनेसे गुञ्जाकी सुन्दरवेल उगेगी ॥ ५ ॥

यस्यांगे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तंभः प्रजायते ।
यस्य नाम्ना च लवणं श्मशानाग्नौ जुहेत्तथा ॥ ६ ॥

यह लता जिसके शरीरपर डाल दी जायेगी उसका आसनस्तभन हो जायगा। जिसका नाम लेकर मुर्देपर चिताकी अग्निमें नोनसे होम करे उसका भी आसन स्तम्भन हो जायगा ॥ ६ ॥

ॐनमो दिगम्बराय अमुकस्यासनं स्तंभय स्तंभय फट् स्वाहा ॥ अस्य मन्त्रस्य लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इस मंत्रको एक लाख जपनेसे सिद्धि होगी ॥

भृंगराजमपामार्गं सिद्धार्थं सहदेविका ।
कोलं वचा च श्वेतार्कः सत्त्वमेषां समाहरेत् ॥ ७ ॥

भांगरा, अपामार्ग, सरसों, सहदेवी, कंकोल, वच, सफेद आककी जड़ इनका सत निकाले ॥ ७ ॥

लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत्सुधीः ।
ललाटे तिलकं कुर्याद्द्रष्टुर्बुद्धिः प्रणश्यति ॥ ८ ॥

लोहेके बरतनमें रखकर तीन दिनतक घोटे फिर मस्तकमें इसका तिलक कर ले। जो इसे देखे उसकी बुद्धि नष्ट हो जाय ॥ ८ ॥

उलूकस्य कपेर्वापि तांबूले यस्य दापयेत् ।
विष्ठाप्रयत्नतस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ॥ ९ ॥

उल्लू या वानरकी विष्ठा होशियारीसे पानमें रखकर जिसे खिलावे उसकी बुद्धिका स्तम्भन हो जाय ॥ ९ ॥

ॐनमो भगवते नृसिंहाय अमुकस्य बुद्धिस्तंभनं कुरु २ फट्-स्वाहा ॥ सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इस मत्रको सवा लाख जपनेसे सिद्धि होगी।

पुष्यार्कोऽङ्घ्रि समादाय अपामार्गस्य मूलकम् ।
घृष्ट्वा लिपेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तंभः प्रजायते ॥ १० ॥

रविवारके दिन पुष्य नक्षत्रमें अपामार्गकी जड़ लाकर और उसे घिसकर अपने शरीरमें लेप करे तो शस्त्रोंका कुछ असर न होवे ॥ १० ॥

चितांगारेण विलिखेन्मंत्रं पात्रे च मृण्मये ।
रिपुनामयुतं तच्च जलकुंडे विनिक्षिपेत् ।। ११ ।।

चिताके कोयलेसे मट्टीके बर्तनमें शत्रुके नामके साथ मंत्र लिख कर उसे जलसे भरी हुई कूँडीमें गेर दे ।। ११ ।।

शिलया स्तंभयेद्द्वारं सेनास्तंभः प्रजायते ।
उष्ट्रास्थि निखनेद्दिक्षुपशुस्तंभः प्रजायते ।। १२ ।।

और ऊपरसे शिलासे ढक दे तो सेनाका स्तम्भन हो जाता है, जिसके सब ओर ऊंटकी हड्डी गाड दे उस पशुका स्तम्भन हो जाता है ।। १२ ।।

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद्गोरोचनैर्नरम् ।
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुंभे नरस्तंभः प्रजायते ।। १३ ।।

रजस्वला स्त्रीकी योनिके वस्त्रपर गोरोचनसे मनुष्यकी तसबीर बनावे और फिर उसका नाम लेकर उसे घडेमें गेर दे तो मनुष्य स्तंभन हो जाता है ।। १३ ।।

इष्टकांसपुटे कृत्वा तस्मिन्मेघं समालिखेत् ।
श्मशानभस्मना स्थाप्य भूमौस्तंभः प्रजायते ।। १४ ।।

ईंटोंका संपुट बनाकर उसमें चिताकी राखसे बादलोंकी तसवीर बनावे और फिर उसे धरतीमें गाड़ दे तो मेघोंका स्तम्भन होता है ।। १४ ।।

मधुना बृहतीमूल रंजयेल्लोचनद्वयम् ।
निद्रास्तंभो भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ।। १५ ।।

शहतमें पिसकर कंटकारीकी जडको नेत्रोंमें आंजनेसे निद्रा नहीं आती है मेरा कहना मिथ्या नहीं है ।। १५ ।।

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पंचांगुलं खनेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तंभनं जायते ध्रुवम् ।। १६ ।।

भरणी नक्षत्रमें गूलरकी लकड़ीकी पांच अंगुलकी कील नावके बीचमें गाड दे तो निश्चय करके नावका स्तम्भन हो ।। १६ ।।

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात् कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कट्यांबद्ध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तंभः प्रजायते ।। १७ ।।

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें काले धतूरेकी जड़ लाकर गर्भिणीकी कमरमें बांधे तो गर्भस्तम्भन हो ।। १७ ।।

बिम्बाकाष्ठस्य धूपेन योनिं धूपयते यदा ।
मुक्तगर्भा तदा नारी जायते नात्र संशयः ।। १८ ।।

बिंबाकाष्ठके धुएंसे योनिमें धूप देनेसे स्त्रीका गर्भ गिर पड़ता है इसमें सन्देह नहीं ।। १८ ।।

ॐनमो भगवते महानृसिंहाय सर्वस्तंभनकर्त्रे सर्वस्तंभनं कुरु २ स्वाहा ।। सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।।

इस मंत्रको सवा लाख जपनेसे सिद्धि होगी ।

इति चतुर्थांक समाप्त

पञ्चम अङ्क

ईश्वर उवाच

अथातः शृणु योगींद्र प्रयोगं द्वेषणाभिधम् ।
अस्मिन्कृतेमहासिद्धिर्जायते द्वेषणात्मिका ।। १ ।।

ईश्वर बोले—हे योगिराज ! अब द्वेषणप्रयोग सुन । इसके करनेसे द्वेषणमें बडी सिद्धि प्राप्ती होती है ।। १ ।।

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्विषः पादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत् ।। २ ।।

बिलाव और चूहेकी विष्ठा लेकर उसमें शत्रुके पैरके तले की मट्टी लेकर मिलावे ।। २ ।।

जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्टच तद्गृहे निखनेद्यदि ।। ३ ।।

मंत्रको सौ बार जपं करके उससे आदमीका पुतला बनावे और नीला कपड़ा लपेटकर उसके घरमें गाड़ दे ।। ३ ।।

विद्वेषो जायते शीघ्रं पितापुत्रावपि ध्रुवम् ।।
चिताभस्मयुतं तत्तु सर्पयोर्दंतचूर्णकम् ।। ४ ।।

तो पिता पुत्र तकमें शीघ्र लड़ाई हो जाय । सांप और नकुल के दांत पीसकर उनमें चिताकी राख मिलावे ।। ४ ।।

पृथक्पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमन्त्रिताम् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ विद्वेषो जायते ध्रुवम् ।। ५ ।।

और अलग पुतले बनाकर जुदे २ उनके नाम लेकर मंत्रसे उनपर पानीके छींटे दे और किसी बगीचेमें धरतीमें गाड दे तो उनमें जरूर आपस में लड़ाई हो ।। ५ ।।

गजकेसरिणोर्दंताच्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्नाहूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ।। ६ ।।

हाथी और शेरके दांतोंकोपीसकर और उनमें मक्खन मिलाकर जिन २ का नाम लेकर अग्निमें होम करे उनमें आपसमें लड़ाई हो जाय ।।६।।

ॐनमो नारदाय अनर्योविद्वेषं कुरु २ ऐं ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा ।
चतुर्लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।।

इस मंत्रको चार लाख जपनेसे सिद्धि होगी ।।

इति पंचमांक समाप्त

षष्ठ अङ्क

ईश्वर उवाच

शृणु योगींद्र वक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ।
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ।। १ ।।

हे योगिराज ! सुन मैं उच्चाटनकी उत्तम विधि कहता हूं, जिसके साधनसे ही मनुष्योंका उच्चाटन हो जाय ।। १ ।।

ब्रह्मदंडीचिताभस्मसिद्धार्थैः संप्रलेपयेत् ।
शिर्वालिंगं मंदवारे तद्गृहीत्वा गृहे क्षिपेत् ।। २ ।।

ब्रह्मदण्डी, चिताकी राख और सरसोंसे शनिवारके दिन शिवजीके लिंगपर लेपन करे और फिर उस लेपको लाकर जिसके घरमे फेंके ।। २ ।।

यस्य तस्योच्चाटनं स्यात्पशुपुत्रादिभिः सहः ।
काकोलूकस्य पक्षाणि यस्य चुल्लचां खनेद्रवौ ।। ३ ।।

उसका पशु तथा बालबच्चोंसमेत उच्चाटन हो जाय । कौए और उल्लूके पंख रविवारको जिनके चूल्हेमें गाड दे ।। ३ ।।

उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ।
आर्द्रोदुंबरकाष्ठस्य कीलकं चतुरंगुलम् ।। ४ ।।

उसका उच्चाटन हो, मेरा कहना झूठ नहीं है। गूलरकी गीली लकडीकी चार अंगुलकी कील लेकर ।। ४ ।।

शयने यस्य निखनेत्तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ।
उलूकविष्ठामपि वा निखनेच्छयने तथा ।। ५ ।।

जिसके पलगमे उरस दे उसका निश्चय उच्चाटन हो । अथवा उल्लूकी विष्ठा शय्यामें लगा दे ।। ५ ।।

नरास्थिकीलकं द्वारि निखनेच्चतुरंगुलम् ।
तत्र मूत्रं तु य कुर्यात्तस्योच्चाटनकं भवेत् ।। ६ ।।

आदमीकी हड्डीकी चार अंगुलीकी कील दरवाजेपर गाड दे । वहां जो मूत्र करे उसका उच्चाटन हो ।। ६ ।।

ॐनमो भगवते महारुद्राय रौद्ररूपाय अमुकस्य
सपरिवारस्योच्चाटनं कुरु कुरु फट् स्वाहा ।।

इस मंत्रको सवा लाख जपनेसे सिद्धि हो ।।

इति षष्ठांक समाप्त ।

सप्तम अङ्क

ईश्वर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि वशीकरणमद्भुतम् ।
यत्प्रयोगाद्वशं यान्ति नरा नार्यश्च सर्वशः ।। १ ।।

ईश्वर बोले–अब अद्भुत वशीकरण कहता हूँ जिसके प्रयोगसे पुरुष, स्त्री, सब वशमें हो जाते हैं ।। १ ।।

ब्रह्मदंडीवचाकुष्ठचूर्णं सूर्यस्य वासरे ।
तांबूलेन तु ये दद्यात्स वश्यो वर्तते सदा ।। २ ।।

रविवारके दिन ब्रह्मदंडी, वच, कूट इनका चूरा जिसे पानमें रखकर दे वह सदा वशमें रहे ।। २ ।।

सहदेवीं गृह्य पुष्यार्के छायाशुष्कां विधाय च।
दद्याच्चूर्णं तांबूले सर्वलोकवशं नयेत् ।। ३ ।।

पुष्यनक्षत्रमें रविवारको सहदेवी लाकर उसे छायामें सुखावे उसका चूरा पनामें रखकर दे तो सब संसारको वशमें कर ले ।। ३ ।।

देवदाल्या च सिद्धार्थैर्गुटिकां कारयेद्बुध ।
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकान् वशंनयेत् ।। ४ ।।

देवदाली और सरसोंकी गोली बनाकर और उसे मुखमें रखकर बात-चीत करे तो सब संसार वशमें हो जाय ।। ४ ।।

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं वश्यकारकम् ।। ५ ।।

केशर, तगर, कूट, हरताल, मनसिल इनमें अनामिका उंगलीका रुधिर मिलाकर तिलक करे तो सब वशीकरण होता है ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं नमो मोहिन्यै सर्वलोकान्मे वशं कुरु २ हुँ फट् स्वाहा ।।
सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।।

इस मन्त्रको सवा लाख जपनेसे सिद्धि होगी ।।

अथ स्त्रीवश्यम्

करपादनखानां च भस्म तांबूलपत्रके ।
दातव्यं रविवारे च वशीकरणमद्भुतम् ।। ६ ।।

रविवारको हाथ, पैरके नखोंकी राख पानमें रखकर दे तो स्त्री बशमें हो जाय ।। ६ ।।

भौमवारे लवंगं च लिंगछिद्रे च निक्षिपेत् ।
बुधे निष्कास्य तांबूले दद्यात्सा वशगाभवेत् ।। ७ ।।

मंगलके दिन एक लौंग लिंगके छेदमें उरस दे । फिर इसे बुधवारके दिन निकालकर जिसे पानमें रखकर दे वह वशमें हो जाय ।। ७ ।।

वामपादतलात्पांसुर्वनितायाः शनौ हरेत् ।
तस्य पुत्तलिकां कुर्यात्तस्याः केशान्नियोजयेत् ।। ८ ।।

स्त्रीके बाएँ पैरके नीचेसे धीरेसे मिट्टी ले ले और उसकी पुतली बनाकर उसमें बाल लगावे ।। ८ ।।

नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ।
सिंदूरेण समायुक्तां निखनेद्द्वारदेशके ।। ९ ।।

उसे नीले कपड़ेसे लपेटकर उसके भगमें अपने वीर्यका निक्षेप करे और फिर सिंदूर लगाकर उसे दरवाजेपर गाड दे ।। ९ ।।

उल्लंघनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते सुचिरं भुवि ।। १० ।।

उसे लांघनेसे प्राण और धन सहित स्त्री वशमें हो जाय । फिर कृतज्ञ मनुष्य चिरकालतक पृथ्वीपर आनंद करे ।। १० ।।

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम् ।
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ।। ११ ।।

रेशमकी बत्ती बनाकर उसपर तालीस, कूट और तगर चुपडे तथा आदमीकी खोपड़ीमें सरसोंका तेल भरकर उसे जलाकर काजल पाडे ।। ११ ।।

पातयेदंजनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ।। १२ ।।

उस काजलके आंजनेसे हमेशा तीनों भुवनोंमें आंखोंके सामने आये हुए सब आदमी दासके समान हो जायंगे ।। १२ ।।

विप्राय वेदविदुषे दत्त्वा कर्षसुवर्णकम् ।
एतन्मंत्रं जपेद्यत्नाद्वश्यं सिद्ध्यति नान्यथा ।। १३ ।।

वेदपाठी ब्राह्मणको सोलह मासे सोनेका दान करके यत्नपूर्वक इस मंत्रके जपनेसे ही सिद्धि होगी, अन्यथा नहीं ।। १३ ।।

ॐनमःकामाक्ष्यै देव्यै अमुकीं मे वशं कुरु २ फट् स्वाहा ।।
सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।।

इसे सवा लाख जपनेसे सिद्धि होगी ।।

अथ राजवश्यम्

विष्णुक्रांताबीजतैलं दीपे प्रज्वाल्य यत्नतः ।
दर्शे कार्तिकमासस्य सोमवारेऽर्द्धरात्रके ।। १४ ।।

दिवालीके दिन सोमवार हो तो आधी रातको विष्णुकांताके बीजोंका तेल भरकर दिया जलावे ।। १४ ।।

कज्जलं पातयेद्धोमाञ्छुभ्रे हेमशरावके ।
यदंजनाच्चक्रवर्ती राजा वशमवाप्नुयात् ।। १५ ।।

सोनेकी साफ कटोरीमें काजल पाडे । उसके आंजनेसे चक्रवर्त्ती राजा वशमें हो जाय ।। १५ ।।

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियाः शुचिः ।
वने गत्वा ह्यपामार्गवृक्षं पश्येदुदङ्मुखः ।। १६ ।।

अमावसको मंगलवार हो तो नित्य कर्म करके पवित्र होकर वनमें जाय और उत्तरकी तरफ मुख करके अपामार्गके वृक्षको देखे ।। १६ ।।

तत्र विप्रं समाहूय कृत्वा पूजां यथाविधिः ।
पलमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ।। १७ ।।

वहां ब्राह्मणको बुलाकर और उसकी विधिपूर्वक पूजा करके उसे ६४ मासे सोना दे ।। १७ ।।

तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकान् ।
मौनेन स्वगृहं गच्छेत्कृत्वाबीजांस्तुनिस्तुषान् ।। १८ ।।

उसके हाथसे अपामार्गके बीज तुडवाकर उन्हें अपने घर चुपचाप ले जाय और उनका छिलका निकाल कर साफ करे ।। १८ ।।

गौरीशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ।। १९ ।।

महादेवका ध्यान करके उन्हें किसी प्रकार राजाको खवा दे तो वह जीवनपर्यंत उसके वशमें हो जाय ।। १९ ।।

चक्रवर्ती वशं याति नान्यथा मम भाषितम् ।
न नीचाय प्रदातव्यं प्रयोगमनुभूतिदम् ।। २० ।।

चक्रवर्ती राजाभी वशमें हो जाय । मेरा कहना मिथ्या नहीं है । यह ऐश्वर्य देनेवाला प्रयोग नीचको नहीं देना चाहिये ।। २० ।।

ॐनमो भास्कराय जगदात्मने राजानं वशमानय ।
कार्यं कुरु २ फट् स्वाहा ।। सपादलक्षजप्तात्सिद्धिः ।

इसको सवा लाख जपनेसे सिद्धि होगी ।। इति सप्तमांक समाप्त ।

अष्टम अङ्क

ईश्वर उवाच

अथाकृष्टिं प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकमना मुने ।
यस्य प्रयोगात्कृष्यंते अपि दूरस्थिता नराः ।। १ ।।

महादेव बोले—हे मुनि ! एकाग्रचित्त होकर सुन । अब मैं आकर्षण कहता हूं जिसका प्रयोग करनेसे दूरके आदमियोंका भी आकर्षण हो जाता है ।। १ ।।

कृष्णधत्तूरपत्राणां रसै गोरोचनायुतैः।
करवीरस्य लेखिन्या यंत्रं पञ्चदशं लिखेत् ।। २ ।।

काले धत्तूरेके पतोंके रसमें गोरोचन मिलाकर कनेरकी कलमसे पन्दरह का यन्त्र लिखे ।। २ ।।

भूर्जपत्रेषु तन्नाम्ना तापयेत्खदिराग्निना ।
शतयोजनगो वापि शीघ्रमायाति नान्यथा ।। ३ ।।

उसे भोजपत्रपर लिखकर जिसका आकर्षण करना हो उसका नाम लेकर खदिरकी आंचसे तपावे तो सौ योजन दूर रहनेवाला भी शीघ्र आजाय। इसमें मिथ्या कुछ नहीं ।। ३ ।।

नृकपाले लिखेद्यंत्रं गोरोचनसकुंकुमैः ।
खदिरांगारकैस्ताप्यं त्रिसंध्यं यस्य नामतः ।। ४ ।।

गोरोचन और कुंकुम मिलाकर आदमीकी खोपड़ीमें यन्त्र लिखकर उस मनुष्यका नाम लेकर तीनों समय खदिरकी अग्नि में तपावे ।। ४ ।।

मंत्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ।
ब्रह्मदंडी समादाय पुष्याकर्ण तु चूर्णयेत् ।। ५ ।।

फिर सिद्धमन्त्रका जप करे तो उर्वसीका भी आकर्षण कर ले। रविवारको पुष्यनक्षत्रमें ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण करे ।। ५ ।।

कामार्ता कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगे विनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ।। ६ ।।

और कामार्ता कामिनीको देखकर उसके शिरपर डाल दे तो वह उसके पीछे हो जाय मेरा कहना अन्यथा नहीं ।। ६ ।।

ॐनमो वीरवेतालाय मंदराचलवासिने अमुकम् आकर्षय आकर्षय ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा ।। लक्षत्रयजपात्सिद्धिर्भवति ।।

यह मन्त्र तीन लाख वार जपनेसे सिद्धि होगी ।। इति अष्टमांक समाप्त

नवम अङ्क

ईश्वर उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ मनुष्याणां सर्वसिद्धयंति हृच्छयाः ।। १ ।।

महादेव बोले—अब यक्षिणियोंका साधन कहता हूं। जिसके सिद्धि करनेसे मनुष्योंकी सब अभिलाषा पूरी होती हैं ॥ १ ॥

आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ २ ॥

आषाढ सुदी पूनोंके दिन हजामत बनवाकर बृहस्पति और शुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षणीका साधन करे ॥ २ ॥

प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्वितः ।
मासमात्रप्रयोगोऽयं निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ॥ ३ ॥

सावन वदी प्रतिपदासे लेकर चन्द्रबल देखकर तीन मासतक यह प्रयोग निर्विघ्न करे ॥ ३ ॥

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ ४ ॥

एकान्त स्थानमें बेलके वृक्षके नीचे शिवजीका षोडशोपचार सहित पूजन करे और रुद्र पाठ करे ॥ ४ ॥

त्र्यंबकेत्यस्य मंत्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥ ५ ॥

"त्र्यंबकं यजामहे" इस मन्त्रका पांच हजार जप करे और प्रतिदिन कुबेरका पूजन करे ॥ ५ ॥

मंत्र—यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरुते नमः ॥ ६ ॥

यह मन्त्र है ॥ ६ ॥

इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥ ७ ॥

यह कुबेरका मन्त्र है इसे एक सौ आठ बार जपे और दिनमें ब्रह्मचर्यसे मौन धारण करके रहे तथा हविष्य भोजन करे ॥ ७ ॥

रात्रेस्तु मध्यमौ यामौ विनिद्रो मित भोजनः ।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ॥ ८ ॥

रातके बीचके दो पहरोंमें निद्रारहित हो कुछ भोजन करके बलके वृक्षके ऊपर बैठकर यह मन्त्र जपे ॥ ८ ॥

मंत्र–ॐक्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा ।।

इति मंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम् ।
कुर्याद्विल्वसमारूढो भासमात्रमतंद्रितः ।। ९ ।।

बेलके वृक्षपर बैठकर सावधान होकर तीन माह तक इस मन्त्रका तीन हजार जप करे ।। ९ ।।

मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ।
नानारूपधरा यक्षीववचित्तत्रागमिष्यति ।। १० ।।

उत्तम मद्य और मांस सामने रख ले क्योंकि अनेक रूप धरनेवाली यक्षिणी किसी न किसी समय वहां आवेगी ।। १० ।।

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपे संसक्तमानसः ।
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ।। ११ ।।

उसे देखकर डरे नहीं पर मन लगाकर जप करे । जिस दिन बलिका भोजन कर, वह देना चाहे ।। ११ ।।

तदा वरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ।
धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम् ।। १२ ।।

तब जो २ मनकी इच्छा हो सब वर उससे मांग ले । धन मंगवानेका वर मांग ले या अपने कानमें सब बात कहलानेका वर मांग ले ।। १२ ।।

भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ।। १३ ।।

भोग भोगनेके लिये अथवा नाच देखनेके लिये वर मांग ले । प्राणियों अथवा स्त्रियोंको बुलवा लेनेका वर मांग ले ।। १३ ।।

राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम् ।
एतद्यदन्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचताम् ।। १४ ।।

राजाको वश करनेको वर मांग ले या आयु, विद्या, यश और बलका वर मांग ले । इसके सिवाय साधककी जो इच्छा हो सो वरमांग ले ।।१४।।

चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दत्ते न संशयः ।
अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ।। १५ ।।

जो यक्षिणी प्रसन्न हो जाय तो निःसन्देह सब वर दे देती है । जो मनुष्य अपने आप प्रयोग करनेमें असमर्थ हो वह इस प्रयोगको ब्राह्मणोंसे करावे । देवता भी इस प्रयोगका आदर करते हैं ।। १५ ।।

सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान् साधयेद्व्रतम् ।
नित्यं कुमारिका भोज्याः परमान्नेन वै त्रयः ॥ १६ ॥

अथवा ब्राह्मणोंकी सहायता लेकर इस व्रतका साधन करे तीन कन्याओंको प्रतिदिन उत्तम अन्नसे भोजन करावे ॥ १६ ॥

सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ।
कुकर्मणि व्यय इचेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ॥ १७ ॥

यक्षिणीके सिद्ध होनेपर जो धन आदि प्राप्त हो उसे अच्छे कामोंमें लगावे । बुरे कामोंमें व्यय करनेसे सिद्धि कदापि नहीं रहती ॥ १७ ॥

गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशे बहवो विघ्ना जायंते नात्र संशयः ॥ १८ ॥

यह सब गुप्त विधिसे करे ! इसे प्रकाश न करे । प्रकाश करनेमें निःसन्देह बहुतसे विघ्न होते हैं ॥ १८ ॥

प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नवदाचरेत् ।
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा ॥ १९ ॥

यह प्रयोग अनुभव किया हुआ है । इसे यत्नपूर्वक करे । इसे निर्विघ्न पूरा करनेसे अच्छी सिद्धि होती है ॥ १९ ॥

गोप्यं चेदं महत्तंत्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः ॥ २० ॥

इस महामन्त्रको छुपाकर रखे । चाहे जिसको न देवे । दुर्जन स्पर्शसे विद्याका फल घट जाता है ॥ २० ॥

इति नवमांक समाप्त ।

दशम अङ्क

ईश्वर उवाच

अथ ते कथयिष्यामि रसायनविधिं परम् ।
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ॥ १ ॥

महादेव बोले—अब मैं तुझसे रसायनकी विधि कहता हूँ जिसके सिद्धि करनेसे पृथ्वीपर मनुष्य कुबेरके समान हो जाता है ।। १ ।।

गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनःशिलाम् ।
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेषयेत् ।। २ ।।

गोमूत्र, हरताल, गंधक, मैनसिल इनको बराबर लेकर जबतक न सूखे तबतक खरल करे ।। २ ।।

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गंधकं रक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचि ।। ३ ।।

लाल गायका मूत्र, लाल गंधक इन्हें पवित्र होकर ग्यारह दिनतक यत्नपूर्वक रक्खे ।। ३ ।।

गोलं कृत्वा द्वादशेऽह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
चतुरंगुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ।। ४ ।।

बारहवें दिन इनका गोला बनाकर उसपर लाल कपड़ा लपेट और चार अंगुल मोटी मिट्टी चारों ओर लगाकर इसे सुखा ले ।। ४ ।।

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत् ।
पलाशकाष्ठलोष्टैस्तु पूरयेद्द्रव्यमध्यगम् ।। ५ ।।

धरतीमें पांच हाथ नीचा गढा खोदे और गोला बीचमें रखकर उसे पलाशके कोयलोंसे भर दे ।। ५ ।।

अग्निं दद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।
ताम्रपत्रेषु संतप्तेष्वेतद्भस्म तु प्रदापयेत् ।। ६ ।।

फिर उसमें यत्नपूर्वक अग्नि लगावे । जब अग्नि जलकर अपने आप ठण्ढी हो जाय तब गोलेको बाहर निकाल ले और तांबेका पत्रा तपाकर उसपर गोलेकी राख डाले ।। ६ ।।

गुंजैकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ।
अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ।। ७ ।।

एक गुंजाके बराबर तांबेका पत्रा तो उसी समय सुवर्ण हो जाय । वनमें एकान्त स्थानमें शिवके मंदिरके पास ।। ७ ।।

शुक्लपक्षे सुचंद्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत्सुधीः ।
त्र्यंबकेति च मंत्रस्य जपं दशसहस्रकम् ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षमें जिस दिन चन्द्रमा अच्छा हो उस दिन यह प्रयोग करे। "त्र्यंबकं यजामहे" इस मंत्रका दश हजार जप करे ॥ ८ ॥

प्रत्यहं कारयेद्विप्रान्भोजयेद्रुद्रसंमितान् ।
यावत्सिद्धिर्न जायेत तावदेतत्समाचरेत् ॥ ९ ॥

यों प्रतिदिन करे और ग्यारह ब्राह्मणोंको प्रतिदिन भोजन करावे। जबतक सिद्धि न हो, इसी प्रकार करे ॥ ९ ॥

अथ द्रव्यमदनमंत्रः

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय। रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥ प्रत्यहं मर्दने अयुतं जपेत् ॥

हरताल आदिको खरल करते समय प्रतिदिन यह मंत्र दश हजार जपे ॥

इत्येवं शंभुना प्रोक्तामन्त्राः प्रत्यक्षसिद्धिदाः ।
स्वप्ने शिवाख्यगिरये अनुभूतास्तु तेन वै ॥ १० ॥

ये प्रत्यक्ष सिद्धि देनेवाले मंत्र स्वप्नमें महादेवने शिवगिरिसे कहे और शिवगिरिने उनकी परीक्षा की ॥ १० ॥

तदाज्ञया मया बद्धाः शुभैः पद्यैर्यथामति ।
अनेन विधिना मत्या येकरिष्यंत्यसंशयाः ॥ ११ ॥

शिवगिरि की आज्ञासे मैंने बुद्धिके अनुसार सब प्रयोगोंको श्लोकबद्ध किया। जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक इस विधिसे उन प्रयोगों को करेंगे ॥ ११ ॥

सिद्धिं ह्यलौकिकीं लब्ध्वा भविष्यंति सुपूजिताः ।
संदेहोऽत्र न कर्तव्यः साक्षाच्छंकरभाषिते ॥ १२ ॥

उन्हें अलौकिक सिद्धि प्राप्त होगी और सब उनकी पूजा करेंगे। साक्षात् महादेवके कहनेमेंसंदेह नहीं करना चाहिये ॥ १२ ॥

श्रीमद्गौडद्विजाग्रणीर्मतिमतांश्रेष्ठो भवान्याभिधोह्यासीद्राम-कुमार इत्यभिहितो विद्वानभूत्तत्सुतः ॥ यः शास्त्रार्थं विवेकनिश्चय-

तया ह्याराध्य सम्यक्शिवं लेभे जन्ममलयादिदुःखरहितामानंदभूतां गतिम् ।। १३ ।।

गौडब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ, विद्वद्वर श्रीभवानीप्रसाद हुए। उनके पुत्र पंडित राजकुमार हुए। ये शास्त्रोंके अर्थोंके विचारमें बड़े प्रवीण थे। इन्होंने शिवकीआराधनाकी और जन्ममरणादि दुःखसे रहित आनन्दस्वरूप गतिको प्राप्त हुए।।१३।।

तत्सूनुः कमलाऽदिशब्दसहितो नारायणोऽहं द्विजस्तद्योगींद्रनिदेशतो रचितवांस्तंत्रं महेशाभिधम् ।। यस्मिन्संशयवर्जिता बहुविधा सिद्धिः प्रकाशीकृता तच्छंभोः कृपया सुसाधकजनानन्दाय भूयात्सदा ।।१४।।

इनके पुत्र लक्ष्मीनारायणने शिवगिरिकी आज्ञासे माहेश्वरीय तंत्रको निर्माण किया। इसमें संशय रहित, अनेक प्रकारकी सिद्धि प्रकट की है वह शम्भुकी कृपासे साधकोंको आनन्ददायक हो ।। १४ ।।

श्रीमज्जैपुरपत्तनेऽस्ति सुभगे श्रीमाधवाख्यो नृपस्तस्मात्कोशचतुर्दशाच्छशिदिशि ग्रामोस्ति धोलाभिधः ।। तत्रास्ते विमलोदका इषुनदी श्रीफाल्गुनेनोद्धृता तस्मिन्मे वसतिः सुपूजिततमे देशे च मत्स्याभिधे ।। १५ ।।

जहां श्रीराजा माधवराव राज्य करते हैं उस जयपुरसे चौदह कोस उत्तरमें एक धौला नामका ग्राम है। वहाँ अर्जनके द्वारा उद्धारकी गई निर्मल जलवाली बाणगंगा बहती हैं। ऐसे मत्स्य देशमें मेरा निवास है ।।१५।।

इति दशमांक समाप्त

इति माहेश्वरीयतंत्रं समाप्तम्

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक. वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS